Public Expenditure
And
Reasons for the Growth of Public Expenditure

सार्वजनिक व्यय सरकारी संस्थाओं तथा निकायों द्वारा किया गया कुल व्यय है। जिससे सरकार अपने कार्यों को पूरा करती है। 19वीं शताब्दी तक सार्वजनिक व्यय पर आय की अपेक्षा बहुत कम ध्यान दिया जाता था। परन्तु 19वीं शताब्दी के बाद इस दिशा में एक नया मोड़ आया। अब अर्थशास्त्रीयों के विचारों में राजकीय हस्तक्षेप कल्याणकारी राज्य की स्थापना के लिए बहुत महत्वपूर्ण हो गया। इसतरह सार्वजनिक व्यय आज सार्वजनिक वित्त का महत्वपूर्ण भाग ही नहीं, अपितु यह सार्वजनिक वित्त का केन्द्र बिन्दु भी बन चुका है। इसीकारण से आज सार्वजनिक व्यय में वृद्धि हो रही है।

सार्वजनिक व्यय में वृद्धि के निम्नलिखित कारण हैं।

1. जनसंख्या में वृद्धि

जनसंख्या में वृद्धि एक विश्वव्यापी समस्या है। जनसंख्या में बढ़ती हुई जनसंख्या की सुख प्रत्येक देश में बढ़ती हुई जनसंख्या की सुख सुविधा के लिए विभिन्न प्रकार के साधन जुटाने और बढ़ाने के उद्देश्य से सार्वजनिक व्यय में उत्तरोत्तर वृद्धि हुई है। नये क्षेत्रों में जनसंख्या बस जाने के कारण प्रशासनिक व्यय बहुत बढ़ गए हैं। सरकार का काम

प्राय प्रजातंत्र द्वारा किसान अथवा प्रति व्यक्ति पर किये गए व्यय में वृद्धि के सिद्धांत पर आधारित है। जितने अधिक व्यक्तियों की सेवा की जाती है, उतना ही प्रति व्यक्ति व्यय अधि[क] होता है।

2. युद्ध एवं युद्ध निवारण सम्बन्धी व्यय

युद्ध सम्बन्धी व्यय बढ़ जाने के कारण प्रत्ये[क] सरकार को भारी मात्रा में व्यय करना पड़ता है। प्रत्येक देश अपनी सुरक्षा के लिए अपने को आधुनिकतम अस्त्र-शस्त्रों से सुसज्जित करने [में] लगा हुआ है। अणु-शक्ति के विकास, जल तथा वायु सेना के अधिकतम प्रयोग तथा युद्ध की विशालता ने सुरक्षा-व्यय को अत्याधिक बढ़ा दिया है।

3. कीमत स्तर में वृद्धि

कीमत स्तर में वृद्धि लोक व्यय में वृद्धि का एक महत्वपूर्ण कारण है। कीमत स्तर ऊंचा रहने के कारण व्यक्तियों की तरह सरकार को भी अपना कार्य चलाने के लिए अधिक व्यय करना पड़ता है।

4. राष्ट्रीय आय एंव जीवन-स्तर में वृद्धि

राष्ट्रीय आय एंव जीवन स्तर में वृद्धि के कारण भी लोक व्यय में वृद्धि हुई है। प्राय: यह कहा जाता है कि "धनी जनता धनी राष्ट्र"। लोगों की आय बढ़ने पर न केवल उनका जीवन-स्तर ऊंचा होता है वरन् सरकार की

आय भी बढ़ जाती है जिसे अधिक कर के रूप में प्रयोग किया जाता है। किसी राष्ट्र में व्यय की जितनी अधिक बढ़ोत्तरी होगी और वहाँ के समाज में जितनी अधिक असमानता और विषमता हो, लोक व्यय का क्षेत्र उतना ही व्यापक और विस्तृत होगा।

5. कल्याणकारी राज्य की स्थापना

कल्याणकारी राज्य की स्थापना के लिए विभिन्न प्रकार की सामाजिक सेवाओं का दायित्व सरकारों ने अपने ऊपर ले लिया है। इससे सार्वजनिक व्यय की मात्रा में अत्याधिक वृद्धि हुई है।

6. आवश्यकताओं की सामूहिक सन्तुष्टि

सामूहिक सन्तुष्टि के लिए सरकार यातायात, जल-आपूर्ति, और बिजली आदि अनेक ऐसी सेवाएँ हैं, जिनकी व्यवस्था किसी सार्वजनिक संस्था द्वारा किया जाना उचित समझा जाता है इन सेवाओं का संचालन करने के लिए सार्वजनिक व्यय में वृद्धि करनी पड़ती है।

7. औद्योगिक विकास

औद्योगिक विकास के लिए कुछ महत्वपूर्ण उद्योगों का राष्ट्रीयकरण किया जाता है। इन उद्योगों को बड़े पैमाने पर संगठित करने के लिए सरकार को अधिक व्यय की आवश्यकता पड़ती है। व्यक्तिगत उत्पादकों को भी सरकार द्वारा विभिन्न प्रकार की सुविधा एवं सहायता दी

जाती है। इन उद्देश्यों से सार्वजनिक व्यय में वृद्धि करना आवश्यक हो जाता है।

8 आर्थिक मन्दी

आर्थिक मन्दी से बचने के लिए सार्वजनिक कार्यों तथा योजनाओं पर बड़ी मात्रा में व्यय किया जाता है। इससे लोगों को रोजगार मिलता है और वस्तुओं एवं सेवाओं की मांग में वृद्धि होती है तथा आर्थिक क्रियाओं का स्तर ऊंचा उठाने में सहायता मिलती है।

9. आर्थिक विकास

आर्थिक विकास के लक्ष्य को पूरा करने के लिए अधिकांश देशों ने आर्थिक नियोजन का तरीका अपनाया है। नियोजित विकास के कार्यक्रमों को पूरा करने के लिए भारी मात्रा में लोक-व्यय की आवश्यकता पड़ती है।

10. नागरिक प्रशासन

नागरिक प्रशासन के लिए नौकरशाही तथा प्रशासकीय मशीनरी का विस्तार हुआ है। सरकारी विभागों एवं कर्मचारियों की संख्या में वृद्धि हुई है जिसके परिणामस्वरूप लोक-व्यय में वृद्धि हुई है।

11. प्रजातान्त्रिक शासन-व्यवस्था

प्रजातान्त्रिक शासन-व्यवस्था के अन्तर्गत जनमत को अपने पक्ष में बनाए रखने के

लिए सत्तारूढ़ दल को अधिक कार्य करने पड़ते हैं। चुनावों, विधानसभाओं, मंत्रिमंडलों तथा अन्य लोकतान्त्रिक संस्थाओं के संचालन पर भारी व्यय करने पड़ते हैं। इस प्रकार प्रजातांत्रिक शक्तियों के द्वारा सरकारों पर लोक-व्यय का भार बढ़ गया है।

उपयुक्त कारणों से वर्तमान युग में लोक व्यय में बहुत अधिक वृद्धि हुई है लोक व्यय का बढ़ना कोई बुरी बात नहीं, परन्तु वह उचित, उत्पादक एवं कल्याणकारी होना चाहिए। इसलिए लोक व्यय अवस्था को संचालित एवं नियमित करने के लिए इन नियमों अथवा सिद्धान्तों का पालन करना आवश्यक होता है।

Dr Sandhya Rani
Dept of Economics